➢ प्रस्तावना-

किसी समाज की चेतना के निर्माण मे इतिहास का योगदान महत्वपूर्ण होता है, यह योगदान ठीक वैसे ही होता है, जैसा योगदान किसी परिवार की चेतना के निर्माण में उस परिवार के बुजुर्ग का होता है। क्योंकि जिस तरह किसी परिवार का बुजुर्ग अपने परिवार का बौद्धिक प्रशिक्षण अपने पारिवारिक इतिहास के माध्यम से करता है, ठीक इसी प्रकार समाज का बौद्धिक प्रशिक्षण इतिहासकार इतिहास के माध्यम से करता है, चाहे वह इतिहास समाज का हो या साहित्य का। लेकिन सामाजिक इतिहास लेखन की विभिन्न इतिहास दृष्टियों के अध्ययन से यह स्पष्ट हो रहा है कि इतिहास के माध्यम से किया जाने वाला यह बौद्धिक प्रशिक्षण इतिहासकारों ने समाज को उसके वास्तविक इतिहास के अनुसार ना करते हुए अपने 'वाद' के अनुसार किया है जिसमें उनके निजी स्वार्थ भी शामिल थे, जैसे साम्राज्यवादी इतिहास दृष्टि ने इतिहास का उपयोग अपने साम्राज्य को स्थापित करने,स्थायित्व प्रदान करने एवं अपनी सत्ता की नीतियों को वैधता प्रदान करने के लिये किया जो समाज के शोषण के लिये थी। राष्ट्रवादी इतिहास दृष्टि ने भी समाज के इतिहास को सिर्फ अपने समाज के इतिहास को सत्ता केन्द्रित ही रखा। सांप्रदायिक इतिहास दृष्टि ने इतिहास के द्वारा अपने समाज को धर्म के आधार पर विभाजित करने का कार्य किया जिसमे एक धर्म विशेष को ही स्थान है। मार्क्सवादी दृष्टि ने भी इतिहास में सिर्फ वर्ग संघर्ष को ही शामिल किया जिसका मूल कारण आर्थिक था। सबलटर्न इतिहास दृष्टि भी सिर्फ एक वर्ग विशेष के विरोध तक ही सीमित हो गई। तो उत्तरआधुनिकतावादी दृष्टि भी पूंजीवाद और नवउपनिवेशवाद की समर्थक मात्र बन गई। इन सब क्रियाकलापों से समाज के इतिहास में सिर्फ कोलाहल,युद्ध और संघर्ष का ही दर्ज हुआ जो कि सत्ता केन्द्रित था, और ऐसा बहुत कुछ दर्ज नहीं हुआ जिसमे सामाजिक समरसता, प्रेम और जीवन था; जो लोक केंद्रित था। इस शोध में इस प्रश्न पर विचार किया गया है कि जिस तरह विभिन्न 'वादों' का वर्चस्व

प्रस्तावना

सामाजिक इतिहास लेखन की दृष्टियों में दृष्टिगोचर होता है, क्या उसी तरह का वर्चस्व हिन्दी साहित्येतिहास की इतिहास दृष्टियों में भी उपस्थित था ?

लेकिन इस प्रश्न पर विचार करने से पहले इस बात पर विचार किया है कि आज समाज को एक ऐसी इतिहास दृष्टि की आवश्यकता है जो समाज के इतिहास को बगैर किसी स्वार्थ और भेदभाव के दर्ज करे जिसमें सिर्फ कोलाहल, संघर्ष, युद्ध और सत्ता केन्द्रित,वर्चस्वशाली लोग ही ना हो बल्कि सामाजिक-समरसता, प्रेम, जीवन और लोक केन्द्रित, लोकहित को समर्पित लोग भी हों। फिर वह इतिहास साहित्य का हो या समाज का।

इसीलिए इस शोध में शोधार्थी द्वारा अहिंसक इतिहास दृष्टि की सैद्धांतिकी निर्माण करने का प्रयास किया गया है जो इतिहास का उपयोग किसी स्वार्थ, वर्चस्व स्थापना और सत्ता को स्थापित करने के लिए ना करते हुए, ना ही इतिहास को किसी 'वाद' की सीमा में बांध के देखें। बल्कि इतिहास को सिर्फ यथा रूप में प्रस्तुत करे जिसमें सामाजिक संघर्ष और विषमताओं के कारणों की पहचान मूल्यनिरपेक्ष रूप से उन तथ्यों को भी दर्ज करे जो समाज में शांति और सद्भावना स्थापित करने में सहयोग करें। वर्तमान समाज और साहित्य को इस तरह की इतिहास दृष्टि की नितांत आवश्यकता है। और इसीलिए हिन्दी साहित्येतिहास की इतिहास दृष्टियों का इस अहिंसक दृष्टि के आधार पर विश्लेषण करना आवश्यक है क्योंकि साहित्य भी समाज की चेतना निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। तो उसका इतिहास भी समाज को निश्चित ही प्रभावित करता है।

प्रस्तुत शोध को तीन अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय में हिन्दी साहित्येतिहास की प्रमुख इतिहास दृष्टियों का परिचयात्मक विवरण के साथ संक्षिप्त विश्लेषण किया गया है, जिससे की इन दृष्टियों की प्रवृत्ती की जानकारी प्राप्त की जा सके।

द्वितीय अध्याय में सामाजिक इतिहास लेखन की प्रचलित प्रमुख इतिहास दृष्टियों जिनमे साम्राज्यवादी, राष्ट्रवादी, सांप्रदायिक, मार्क्सवादी, सबलटर्न, और उत्तरआधुनिकतावादी शामिल है, का अहिंसात्मक इतिहास दृष्टि के आधार पर आलोचनात्मक विश्लेषण करते हुए अहिंसक इतिहास दृष्टि की अवधारणा प्रस्तुत की गयी है।

तृतीय अध्याय में हिन्दी साहित्येतिहास की चयनित इतिहास दृष्टियों आचार्य रामचन्द्र शुक्ल एवं आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के इतिहास लेखन के विशेष संदर्भ में उनके द्वारा लिखे गये हिन्दी साहित्येतिहास के ग्रन्थों का (आचार्य शुक्ल: हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य द्विवेदी: हिन्दी साहित्य का आदिकाल, हिन्दी साहित्य की भूमिका एवं हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास) अहिंसक इतिहास दृष्टि की आधार पर विश्लेषण किया गया है।

परिशिष्ट में उन ग्रन्थों की सूची दी गयी है जिनके अध्ययन ने शोध के लिये शोधार्थी की दृष्टि को विस्तार देने में तो महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, पर उनका संदर्भ शोध-प्रबंध में नहीं लिया गया है।

अंत में **संदर्भ ग्रंथ सूची** दी गई है, जिसमे उन ग्रंथो और अन्य स्रोतों की सूची दी गई जिनसे से लिये गए संदर्भों के माध्यम से यह शोध अंतिम परिणति तक पहुँचा। यह सूची पुस्तकों के प्रकाशन वर्ष के अनुसार बढ़ते क्रम में दी गई है, चाहे वह प्रकाशन वर्ष पुन:मुद्रित संस्करण का ही हो।

- **शोध प्रविधि –**

यह शोध विवेचनात्मक श्रेणी का है जिसके अन्तर्गत तथ्य विश्लेषण प्रविधि का प्रयोग किया जायेगा जो आंतरिक तर्क (Internal Logic) पर आधारित होगा । कुछ स्थानों पर तुलनात्मक शोध पद्धति का प्रयोग भी किया जायेगा। प्राथमिक तथ्यों के रूप में आधार ग्रंथो का अध्ययन किया जायेगा । द्वितीय स्रोत के रूप में पुस्तकें,पत्रिकाएं,इंटरनेट सामग्री द्वारा एकत्र की जायेगी ।

➢ **शोध उद्देश्य** –

✓ हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की प्रमुख प्रवृतियों और दृष्टियों की पड़ताल करना।

✓ इतिहास लेखन की एक नई दृष्टि अहिंसक इतिहास दृष्टि से हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन को देखने की कोशिश करना।

➢ **परिकल्पना**–

✓ हिंदी साहित्य के प्रमुख इतिहास लेखन में अहिंसक इतिहास दृष्टि का अभाव था।

✓ आचार्य शुक्ल और हजारी प्रसाद द्विवेदी की इतिहास दृष्टि में मौलिक भिन्नता थी।

➢ **शोध सीमा-**

यह शोध विषय व्यापक अध्ययन क्षेत्र रखता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल,आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की इतिहास दृष्टियों का विश्लेषण अहिंसक इतिहास दृष्टि से किया जाएगा। समय सीमा के अभाव के कारण वर्णित लेखकों के सिर्फ इतिहास संबंधी पुस्तकों के विश्लेषण तक सीमित किया गया है।

कोई भी कार्य अंतिम परिणति तक पहुंचता है तो वह किसी एक व्यक्ति की मेहनत का परिणाम नहीं होता, उसमे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सामुहिक सहयोग और मार्गदर्शन होता है। इस सहयोग और मार्गदर्शन के लिये उन सभी लोगों के प्रति मेरे मन में सम्मान और श्रद्धा का ही भाव है, जिसे आभार जैसी औपचारिकताओं के माध्यम से व्यक्त नहीं किया जा सकता। लेकिन उनका परिचय भी ना कराना उनका

अनादर करने जैसा ही होगा, इसलिए उनका परिचय कराने हेतु उनका नाम आप सभी के सामने रख रहा हूँ। इस क्रम में हमारे विभागाध्यक्ष डॉ॰ 'नृपेन्द्र प्रसाद मोदी' जी का ह्रदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होने सदा ही विभागीय औपचारिकताओं से यथासंभव स्वतन्त्रता प्रदान कर विभाग में शोध के लिये आवश्यक स्वतंत्र माहौल प्रदान किया, इसमें विभाग के सभी अध्यापकों डॉ॰ 'चित्रा माली' मैम, डॉ॰ 'मनोज राय' सर, एवं डॉ॰ डी॰ एन॰ प्रसाद सर, ने सहयोग किया। इसके बाद में अपने उन गुरूओं का नाम लेना चाहूँगा जिन्होने उच्च शिक्षा के प्रति मुझे मार्गदर्शन देते हुए इसके लिये संस्कारित किया, डॉ॰ 'राजेन्द्र यादव' हिंदी विभाग डॉ॰ हरि सिंह गौर ॰ वि॰वि॰सागर ने हमेशा ही मेरा उतसाहवर्धन किया है, इसके बाद वहीं पर नियुक्त डॉ॰ 'आशुतोष मिश्र' जिनसे मुझे सदा ही प्रेरणा मिली है, ने हमेशा ही मेरा मार्गदर्शन किया है और समय-समय पर मेरे विषय से संबन्धित सामग्री उपलब्ध कराई है इसके लिये में इनको प्रणाम करते हुए इनके प्रति ह्रदय से आभार व्यक्त करता हूँ। इसी क्रम में नाम लेना चाहूँगा सागर के ही डॉ॰'कमलेश दुबे सर का जिनसे हमेशा ही बड़े भाई की तरह डांट और स्नेह प्राप्त होता रहा है। इसी क्रम में अपने अग्रज भाइयों का नाम लेना चाहूँगा, 'पंकज उपाध्याय' ने सदा ही शोध प्रविधि से संबन्धित मेरी जिज्ञासाओं को दूर किया है, 'संजीव मजदूर झा' जो सदा ही शोध में संवाद के पक्षधर रहे हैं जिससे में लाभांवित हुआ हूँ, 'संजीव झा' जो शोध की गुणवत्ता और विश्वसनीयता के लिये मुझे सजग करते रहे है, विभाग के ही पाठक बंधु भी समय-समय पर मेरी सहायता के लिए सदैव तत्पर रहे हैं, और उन सभी का जिनका नाम में नहीं ले पाया ह्रदय से आभार व्यक्त करता हूँ। इसके बाद में अपने बैच के सभी शोधार्थीओं के सहयोग के लिये उनका आभार व्यक्त करता हूँ। अपने छोटे भाई और 'रानू' का भी नाम में लूँगा जो समय-समय पर मेरा सहयोग करते रहे हैं। और अंत में मैं अपने गुरु **'डॉ॰ राकेश मिश्र'** जिन्होने यह विषय सुझाया और सदा ही मेरा मार्गदर्शन किया, एवं अपने **माता-पिता** जिन्होनें सदा ही मुझे पारिवारिक ज़िम्मेदारी से मुक्त रखते हुए शिक्षा के लिये स्वतंत्रता प्रदान किया, को यह शोध-प्रबंध

समर्पित करता हूँ। और अतं में समय सीमा में शोध संबंधी जो **त्रुटियां** रह गयी हो उनकी ज़िम्मेदारी स्वयं लेता हूँ।